अणुव्रत से आएगी व्यापार में सूचिता : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ 12 जनवरी सौभाग्य से ही किसी को साधना का पथ मिलता है। एक साधक, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा व उत्साह के साथ घर से चलता है साधना के पथ को स्वीकार करता है। इस श्रद्धा में कमी नही आनी चाहिए। मन में चंचलता है, विकार उत्पन्न है तो साधना में कमी रह जाती है। अनास्था का भाव साधक के मन में नही आना चाहिए। उक्त उपदेश राष्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने स्थानीय गोलछा ज्ञान मन्दिर के प्रागण में आयोजित "अणुव्रत और व्यापार सम्मैलन" में दिया।

उन्होने कहा कि हमारे में निष्ठा और श्रद्धा का जो भाव स्वीकार किया हुआ है वह तो रहना ही चाहिए और यह भाव ज्यादा दृढ़ होना चाहिए। मौन, प्रवचन श्रवण व ध्यान भी एक साधना है और इनका भी एक अपना महत्व है। हर साधक को राग और द्वेष से मुक्त रहने का अभ्यास करना चाहिए।

अणुव्रत और व्यापार पर परिचर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक रास्ता है वह सभी के लिए उपयोगी है। इसके द्वारा व्यापारी वर्ग में नैतिकता की प्रतिष्ठा हो सकती है। व्यापारियों को केवल पैसा कमाने के उद्देश्य से ही व्यापार नही करना चाहिए अपितु सेवा भावना, शुद्धता की भावना व नैतिकता से व्यापार करना चाहिये। दूसरों की भावना को समझकर ही व्यापार में सुचिता का समावेश हो सकता है।

उन्होने कहा की 2010 का वर्ष घोटालों का वर्ष रहा है। आदमी के भीतर कितनी तृष्णा है ? मनुष्य के भीतर दो वृतियॉ होती है काम की व क्रोध की जो उसे अधर्म के मार्ग पर ले जाती है। उद्योगो पर बोलते हुए कहा कि उद्योगपति मजदूरों का शोषण नही करे और मजदूर भी पूरी ईमानदारी से कार्य करे। "कोई किसी का शोषण नही करे बल्कि पोषण करें "

जीवों का एक दुसरे के परस्पर सहयोग से ही कार्य चलता है। साधु साध्वियों का कार्य भी अग्रणीय संत व सहवर्ती संतो के परस्पर सहयोग से मधुर व पवित्र बना रहता है। अणुव्रत व्यापार सम्मेलन को मुनि सुखलाल व मुनि कमलकुमार ने भी सम्बोधित करते हुए कहा की आज नैतिकता से जीवन जीने के लिए अणुव्रत की महती आवश्यकता है। रतनगढ़ अणुव्रत समिति के अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने कहा कि जिस धन से अनर्थ होता है वह धन व्यर्थ है। परमार्थ करने वाला धन ही सार्थक है। अणुव्रत मानवीय दुर्बलताओ को नष्ट करने का सशक्त मार्ग है। अणुव्रत हमे जीवन जीने की कला सिखाता है। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने कहा कि प्रतिदिन पूजा करना, प्रवचन सुनना, रात को नही खाना, उपवास करना, आदि उपासना प्रधान धर्म में गहरी आस्था होने पर भी यदि प्रमाणीकता, नैतिकता आदि चरित्रमूलक धर्म का आचरण नही है, तो वह व्यक्ति अपने आप को धार्मिक कैसे मान सकता है? छापर से आये धन्नाराम प्रजापत ने भी अणुव्रत सम्मेलन में गितिका सुनाई। कार्यक्रम में कन्यामण्डल की और से मंगलाचरण किया गया। समारोह में रूपचन्द सेठिया द्वारा लिखित पुस्तक "साध्वी श्री सिद्धिश्री " का लोकार्पण आचार्य प्रवर द्वारा किया गया। आचार्य प्रवर ने साध्वीश्री के तपमय जीवन को अनुकरणीय बताया। कल के कार्यक्रम का विषय होगा "अनेकान्त चेतना का जागरण "। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद पाण्डिया ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+919831017467
rs_dugar@yahoo.com